एक अध्ययन:श्री अरविन्द और वर्तमान शिक्षा नीति

डॉ० अनुप्रिया
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर

हिंदी विभाग, भारती महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश;वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति जो भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्त्वपूर्ण सुधार लाने के लिए तत्पर है, उसके बीज श्री अरविन्द घोष के विचारों में परिलक्षित होते हैं। श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मात्र ज्ञान प्राप्ति नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास को सुनिश्चित करने के साथ-साथ आत्मानुशासन, आत्मविश्वास और स्वावलंबन की भावना को बढ़ावा देना भी है। वे भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता को शिक्षा के केंद्र में रखने की आवश्यकता पर बल देते हैं। वर्तमान शिक्षा नीति का उदेश्य जो कि एक समग्र विकास पर केंद्रित है और जो खेल, कला, नैतिक शिक्षा के साथ-साथ जीवन कौशल के विकास से पूरी तरह ओत-प्रोत है ,श्री अरविन्द के दर्शन को प्रतिपादित करता है। यह शोधपत्र श्री अरविन्द के विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों के बीच संबंध का एक अध्ययन है। साथ ही ,यह पत्र न केवल वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों पर विचार करता है, बल्कि भविष्य के लिए एक ऊर्ध्वगामी दिशा को भी सुनिश्चित करता है।

कुंजीशब्द:*अध्यात्म, दर्शन, शिक्षा, विकसित भारत, भविष्य, सर्वांगीण विकास ,आत्मनिर्भरता ,जीवन कौशल ,तकनीकी ,सृजनात्मकता , नवाचार इत्यादि।*

प्रस्तावना

किसी भी सामान्य मनुष्य की गरिमा और महिमा उस देश की शिक्षा पर निर्भर करती है जिसमें वह रहता है क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा महत्त्वपूर्ण पहलू है जो मनुष्य को उस गंतव्य तक ले जाती है जहाँ मनुष्य आत्मा और मस्तिष्क का संयोजन कर किसी भी जड़वादी विचारधारा से पूर्णतः स्वतंत्र होकर एक संयत जीवन यापन कर पाता है । इसलिए प्रत्येक देश की चिंता शिक्षा के संबंध में उचित मार्गदर्शन की होती है। आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विचारकों और शिक्षकों के सामने जब अनेक समस्याए भयंकर रूप से उपस्थित हैं, तो इन समस्याओं के मूल कारणों को खोजने में श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन से सहायता ली जा सकती है क्योंकि अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने व्यापकता और गहराई दोनों ही दृष्टियों से सत्य की खोज की है। उनका शिक्षा दर्शन केवल समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन में ही नहीं अपितु वैश्विक शिक्षा दर्शन में भी विशिष्ट स्थान रखता है। श्री अरविन्द घोष ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पुनरुत्थान के लिए गहन योगदान दिया।उनकी शिक्षाएं और विचारधारा न केवल आध्यात्मिक उत्थान पर केंद्रित थीं, बल्कि वे राष्ट्रीय शिक्षा और सामाजिक विकास के विषय में भी प्रेरणादायक साबित हो रही हैं। आज जब भारत राष्ट्रीय शिक्षा नीति)NEP) 2020के माध्यम से अपने शैक्षिक ढांचे को पुनर्गठित कर रहा है, वहाँ श्री अरविन्द की दृष्टि शिक्षा जगत् को गहराई के साथ प्रेरित करती है।

समग्र शिक्षा की अवधारणा

श्री अरविन्द के व्यक्तित्व के कई पक्ष हैं ;वे एक महर्षि, कवि, पत्रकार ,शिक्षक इत्यादि हैं। उनके जीवन पर वेद, उपनिषद और भारतीय ग्रंथों का प्रमुख प्रभाव रहा है। साथ ही ,उनका शिक्षा दर्शन एक समग्र और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है। उन्होंने शिक्षा को न केवल ज्ञान के अर्जन तक ही सीमित रखा, बल्कि उसे आत्म-विकास और आत्म-साक्षात्कार का साधन भी माना। उनके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की सभी संभावनाओं का पूर्ण विकास करना है। वही शिक्षा सार्थक और ग्राही है जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में संतुलित विकास की बात करे। उनका यह मानना था कि शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यंत चलती रहती है। "उन्होंने शिक्षण पद्धति में स्वतंत्रता, रचनात्मकता और व्यक्तिगत अनुभव को प्रमुखता दी। उनका मानना था कि शिक्षक को छात्रों का मार्गदर्शक होना चाहिए, जो उनकी सहज वृत्तियों और रुचियों को प्रोत्साहित करें)समकालीन भारतीय दर्शन(1991 ,।" इसके अलावा, उन्होंने शारीरिक शिक्षा, ध्यान और योग को शिक्षा के महत्त्वपूर्ण अंगों के रूप में सम्मिलित किया।

श्री अरविन्द कहते हैं कि जीव की आत्मा में 'ज्ञान' सदा सुषुप्तावस्था में रहता है और मौलिक शिक्षा का आधारअन्तःकरण है, जिसके पाँच पटल उन्होंने बताए हैं तथा उनके प्रशिक्षण एवं विकास पर बल दिया। वह है –शरीर ,मन ,बुद्धि ,चिंतन और ज्ञान। उनके अनुसार शिक्षा को इन्हीं आधारों या स्तरों पर विकसित करना चाहिए। शरीर से उनका तात्पर्य है –शारीरिक क्रियाओं को संयमित और अनुशासित करना ;शरीर के सभी अंगों और क्रियाओं का सर्वांगीण प्रणालीबद्ध और सुव्यवस्थित विकास करना; और कोई दोष और विकृति हो तो उसे सुधारना। श्री अरविन्द ज्ञान के माध्यम से शिक्षा के प्रति एक नया दृष्टिकोण रखते हैं क्योंकि इसके माध्यम से उन्होंने यह घोषित किया था कि शिक्षा मात्र सूचनाओं का संग्रह नहीं है। सूचनाएं ज्ञान की नीव नहीं हो सकती हैं। वे अधिक से अधिक सामग्री भर हो सकती हैं जिनके द्वारा जानने वाल अपने ज्ञान की वृद्धि करता है अथवा वे वह बिंदु हैं जहाँ से ज्ञान प्रारंभ होता है या नई खोजों के अन्वेषण की दिशा आरम्भ होती है।अर्थात् वह शिक्षा जो अपने को केवल सूचना देने तक ही सीमित रखती है ,वह असली शिक्षा नहीं है। इस प्रकार वह शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का उपक्रम मानते हैं।

वह कहते हैं " –सच्ची व वास्तविक शिक्षा वह है जो बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे आध्यात्मिक विकास में सहायता प्रदान करे। शिक्षा का उद्देश्य न केवल बौद्धिक बल्कि शारीरिक, मानसिक भावनात्मकऔरआध्यात्मिकविकासहोनाचाहिए)ऑल रिसर्च जर्नल(। "इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी प्रत्येक बालक की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति ,पहचान और उनके विकास की ओर उन्मुख है; यह कला ,विज्ञान ,तकनीकी और व्यावसायिक गतिविधितों से परिपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार , "सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि का समग्र केंद्रबिंदु शिक्षा प्रणाली को रटने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशल से सुसज्जित करना है)राष्ट्रीय शिक्षा नीति(2020 ,।" श्री अरविन्द और वर्तमान शिक्षा नीति दोनों ही समग्र विकास पर ज़ोर देते हैं और यह मानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। इस प्रकार NEP2020एक समग्र विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करता है और एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल इन सभी के बीच बहु-विषयक विकास पर ज़ोर देता है।

स्वतंत्रता ,जीवन कौशल ,तकनीकी और आत्मनिर्भरता

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना है। श्री अरविन्द के अनुसार, इस संसार में प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से भिन्न हैं जैसे कि उनकी आदतें ,रुचियों के विषय इत्यादि। ऐसी परिस्थिति में यदि एकांगी शिक्षा व्यवस्था को सभी बच्चों पर लागू कर दिया जाए तो उससे उनकी प्रकृति का हनन हो जाएगा। "बच्चे को ठोक-पीट कर माता-पिता या अध्यापक के चाहे हुए रूप में गढ़ना एक अज्ञानपूर्ण और बर्बर अंधविश्वास है। उसे अपनी प्रकृति के अनुसार अपना विस्तार करने को प्रेरित करना चाहिए)शिक्षा पर श्री अरविन्द व श्रीमाताजी के कुछ चुने हुए वचन(2019 ,। "इस प्रकार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें बच्चों की अभिरुचियाँ शामिल हों और उसी के अनुरूप उनकी स्मृति कल्पना ,चिंतन और निर्णय शक्ति सभी का विकास हो। जब बच्चा अपनी अभिरुचि के अनुसार पढ़ता है तब वह स्वतंत्र और निर्भर अनुभव करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह स्वतंत्रता देती है कि हर बच्चा कोई भी विषय अपनी स्वेच्छा से पढ़ सके; जिस भी विषय में उसकी रुचि है वह उसका अध्ययन करके आत्मनिर्भर बन सके। नई शिक्षा नीति भी अवधारणात्मक समझ पर ज़ोर देती है न की रटंत पद्धति पर। इन सारे पहलुओं को नई शिक्षा नीति में समाविष्ट किया गया है।

सांस्कृतिक जागरूकता और आध्यात्मिकता

श्री अरविन्द अपने शिक्षा के दर्शन में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर की समझ को विकसित करने के पक्षधर हैं। वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता की महानता को पुनः स्थापित करने का महत प्रयास करते हैं और सार्थक जीवन की दिव्यता को अनेक रूपों में संस्कृति का प्रतिफलन बताते हैं। वे 'भारतीय संस्कृति के आधार' नामक अपनी पुस्तक में कहते हैं " –भारतीय संस्कृति यह मानती है कि आत्मा ही हमारी सत्ता का सत्य है और हमारा जीवन आत्मा की एक अभिवृद्धि और विकास है(2017)।" अरविन्दशिक्षा के मुख्य उद्देश्य को मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास कहते हैं। अपनी आंतरिक शक्तियों के विकास और संवर्धन से मनुष्य पूर्ण मानव की संज्ञा प्राप्त कर सकता है। इसी उद्देश्य से अरविन्द आध्यात्मिक शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व प्रदान करते हैं, यद्यपि साहित्यिक और वैज्ञानिक विषयों को भी उन्होंने बहुत प्रमुखता दी है। उनके विचारानुसार शिक्षा में "सभी विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए, परंतु उसका मूल उद्देश्य मानव विकास ही होना चाहिए)मानवता के प्रणेता महर्षि अरविन्द , (2021। "

उनकी दृष्टि में, शिक्षा का सबसे उच्चतम उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति हैइसलिए व्यक्ति की आत्मा की खोज और आत्म-साक्षात्कार ही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा का आधार अन्तःकरण है और उसके पाँच पटल हैं जिनके प्रशिक्षण और विकास पर उन्होंने बल दिया। शिक्षा के पूर्ण होने के लिए उसमें पाँच प्रधान पहलू होने चाहिए। इनका संबंध मनुष्य की पाँच प्रधान क्रियाओं से होगा –भौतिक, प्राणिक, मानसिक, आंतरात्मिक और आध्यात्मिक। साधारणतया, शिक्षा के ये सब पहलू व्यक्ति के विकास के अनुसार, एक के बाद एक, कालक्रम से आरंभ होते हैंपरन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि एक पहलू दूसरे का स्थान ले ले, बल्कि सभी पहलुओं को जीवन के अंतकाल तक, परस्पर एक दूसरे को पूर्ण बनाते हुए ज़ारी रहना चाहिए। इस प्रकार श्री अरविन्द की दृष्टि में शिक्षा का जो महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अपने सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर की समझ विकसित करना है , वह वर्तमान शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति, मूल्य और संस्कारों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने केरूप में दिखाई देता है जोकि भारतीय भाषाओं, कला, संगीत, और योग इत्यादि को भी शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने का अनूठा प्रस्ताव करती है।

शिक्षा का माध्यम और पद्धति

श्री अरविन्द मातृभाषा को बच्चे की शिक्षा का उपयुक्त माध्यम मानते हैं। मातृभाषा के माध्यम से एक बच्चा अपने देश की संस्कृति, साहित्य और इतिहास का परिचय प्राप्त करता है ,और उसे अपने चारों ओर जीवन को समझने में सहायता मिलती है। मातृभाषा पर अधिकार होने के बाद ही विदेशी भाषाएँ सिखाई जानी चाहिए। उनका मानना है – "मातृभाषा शिक्षा का उचित माध्यम है, इसलिए बच्चे की प्रारंभिक शक्तियाँ उसी पर अधिकार पाने में खर्च होनी चाहिए। प्रायः हर एक बच्चे में कल्पना शक्ति, शब्दों के लिए नैसर्गिक प्रवृत्ति, नाटकीय क्षमता, विचार आदि चीजें होती हैं)शिक्षा के आयाम, (1974। "नई शिक्षा नीति के विषय में भी हम यह देखते हैं कि यह भी व्यक्तियों की अपनी-अपनी मातृभाषा पर ही ज़ोर देती है । मातृभाषा में शिक्षा के अनेक फायदे हैं, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। मातृभाषा में पढ़ाई करने से बच्चे विषयवस्तु को जल्दी और बेहतर तरीके से समझते हैं, जिससे उनकी सीखने की गति और प्रभावशीलता बढ़ती है। "यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपनी घर की भाषा ,मातृ-भाषा में सार्थक अवधारणों को अधिक तेज़ी से सीखते हैं और समझ लेते हैं ...सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूल इसकी अनुपालना करेंगे। विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य पुस्तकों को घरेलू भाषाओं/मातृ-भाषाओं में उपलब्ध कराया जाएगा)नई शिक्षा नीति(2020 ,। "इस प्रकार अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बच्चे अपनी सृजनात्मकता और कल्पनाशक्ति का अधिकतम उपयोग कर पाते हैं। मातृभाषा में शिक्षा से बच्चों को अपनी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक मान्यताओं को बेहतर तरीके से समझने और उन्हें अपनाने का अवसर मिलता है।अपनी भाषा में पढ़ाई करने से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपनी बात आसानी से समझ सकते हैं और अभिव्यक्त कर सकते हैं।

शिक्षा ,सृजनात्मकता और आत्म-अन्वेषण

श्री अरविन्द कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को आत्म-अन्वेषण और आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी सृजनात्मकता को पहचानने और विकसित करने में मदद करना है। उन्होंने बच्चों को स्वयं के बारे में जानने और अपनी विशेषताओं को प्रकट करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा नीति में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के ये तत्व उनकी व्यापक और गहन शैक्षणिक दृष्टि का हिस्सा हैं जो बच्चों के समग्र और संतुलित विकास को प्राथमिकता देती हैं। उनके अनुसार प्रत्येक बच्चे में एक अंतर्निहित सृजनात्मक क्षमता होती है। उन्होंने शिक्षा को बच्चों की स्वाभाविक रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप ढालने पर ज़ोर दिया ताकि वे स्वतंत्रता से सोच सकें और अपने विचारों को व्यक्त कर सकें।

श्री अरविन्द ने बच्चों को पुस्तकों और कक्षाओं से बाहर के अनुभवों के माध्यम से पढ़ाने लिखाने)सिखाने(पर बल दिया। इस दृष्टिकोण से बच्चों को कला, संगीत, नाटक और विभिन्न शिल्पों में हाथ आजमाने के अवसर दिए जाते हैं, जिससे उनकी सृजनात्मकता को प्रोत्साहन मिलता है। वर्तमान शिक्षा नीति में भी यह प्रावधान है कि बच्चा अपनी रचनात्मकता को नया आयाम दे सके। मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम के अंतर्गत बच्चा अपनी रुचि के अनुसार किसी भी क्षेत्र में नवाचार को प्राप्त कर सके। इसमें प्रौद्योगिकी और नवाचार के उपयोग पर विशेष ज़ोर दिया गया है ताकि शिक्षा अधिक सुलभ, प्रभावी और समावेशी हो सके। यह छात्रों को नवीनतम तकनीकी साधनों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है। प्रायोगिक आधारित अधिगम को अपनाया गया है; प्रत्येक विषय में कला और खेल को एकीकृत किया गया है, और कहानी-आधारित शिक्षण-शास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शिक्षण-शास्त्र के तौर पर देखा गया है। इनके साथ-साथ ,अन्य विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज को

प्रोत्साहित किया है और हर छात्र को व्यावसायिक शिक्षा का अवसर प्रदान करने का प्रावधान करती है, जिससे वे आत्मनिर्भर और रोजगार योग्य बन सकें।

नैतिक धारणा ,मूल्य और संस्कृति

किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके भीतर निहित मूल्यों को प्रतिबिम्बित करता है। मूल्यहीन जीवन अर्थहीन होता है। मूल्य-निर्माण में समाज एवं परिवेश को अद्वितीय स्थान प्राप्त है क्योंकि व्यक्ति समाज-निरपेक्ष होकर जीवन का निर्वाह नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान् इमाईल दुर्खीम का मानना है " –समाज का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण ताने-बाने में झलकता है। उसका भीतरी और बाहरी व्यवहार समाज की सामूहिक चेतना को दर्शाता है)नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध(2014 ,।" इसलिए अनेक विचारकों ने समाज को एक नैतिक शक्ति माना है। नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को बच्चे की पाठ्यचर्या का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है। सम्भवतः यह आज समूचे भौतिक विकास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। श्री अरविन्द भी नैतिकता को आंतरिक ज्ञान की सीमा में रखते हैं। वह कहते है " –मनुष्य की सत्ता में मानसिक स्वभाव नैतिकता पर अवलंबित होता है और जो बौद्धिक शिक्षा नैतिक और भावात्मक प्रकृति की पूर्णता से अलगाव पर आधारित रहती है वह मानव-प्रगति के लिए हानिकर होती है)शिक्षा पर श्री अरविन्द व श्रीमाताजी के कुछ चुने हुए वचन(2019 ,।"

किसी भी आदर्श शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह नैतिक शिक्षा केवल उपदेश और अध्ययन से संभव नहीं है क्योंकि ये सब कृत्रिमएवं यन्त्रवत् साधन हैं। मनुष्य की नैतिक प्रकृति में भाव, संस्कार और स्वभाव सम्मिलित हैं। नैतिक विकास के लिए इन सबका रूपान्तर आवश्यक है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरू शिक्षार्थी के सम्मुख एक आदर्श था जिससे उसके चरित्र के अनुकरण से ही उसे नैतिक शिक्षा प्राप्त हो जाती थी । आधुनिक युग में उन प्राचीन परिस्थितियों को संभवतःवापस नहीं लाया जा सकता परंतु ऐसी शिक्षा प्रणाली की स्थापना अवश्य की जा सकती है जिसमें शिक्षक वर्ग केवल वैतनिक प्रशिक्षक न होकर मित्र, निर्देशक और सहायक के रूप में भी उपस्थित हो। नई शिक्षा नीति के अनुसार, विद्यार्थियों को कम उम्र में सही को पहचानने और उसे अपने जीवन में लाने के महत्त्व को सिखाया जाएगा, और नैतिक निर्णय लेने के लिए एक तार्किक ढांचा दिया जाएगा)राष्ट्रीय शिक्षा नीति(2020 ,। "अतः यह कहा जा सकता है कि यदि मुनष्य के नैतिक पक्ष का विकास किए बिना अन्य पक्षों का विकास कर दिया जाए तो वह और भी अधिक खतरनाक होगा क्योंकि शिक्षित मनुष्य विज्ञान व प्रौद्योगिकी का प्रयोग विनाश के लिए करेगा इसलिए मूल्य रहित शिक्षा से तो अशिक्षा ठीक है।

निष्कर्ष

श्री अरविन्द का शैक्षणिक चिंतन बहुत ही प्रामाणिक और प्रासंगिक है। मानव की बुद्धि का विकास ही समृद्धि के विकास का चरम लक्ष्य नहीं हैबल्कि मानवता का लक्ष्य मस्तिष्क का अतिक्रमण करके मनुष्य को वहाँ ले जाना है जहाँ संस्कृति, जन्म-मृत्यु और काल से परे चली जाती है। आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विचारकों और शिक्षकों के सामने जब अनेक समस्याए भयंकर रूप से उपस्थित हैं तो इन समस्याओं के मूल कारणों को खोजने में श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन से सहायता ली जा सकती है। क्योंकि अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने व्यापकता और गहराई दोनों ही दृष्टियों से सत्य और सत्यतर जीवन की खोज की है। इसीलिए उनका शिक्षा दर्शन केवल समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन के लिए ही नहींअपितु वैश्विक शिक्षा दर्शन के लिए भी दिशा निर्देशन का कार्य करता है।

संदर्भ-सूची-

1. कुमार ,अशोक .भारतीय दर्शन में मोक्ष चिन्तन एक तुलनात्मक अध्ययन, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल , .1973

2. कृष्णमूर्ति ,जिड्डु .शिक्षा के आयाम .राजघाट शिक्षा केंद्र .वाराणसी.1974 ,

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति .2020

4. श्री अरविन्द भारतीय संस्कृति के आधार प्रकाशक :श्रीअरविन्द आश्रम प्रकाशन विभाग, पॉण्डिचेरी ,मुद्रक :श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पॉण्डिचेरी ,आवृति .2017

5. समकालीन भारतीय दर्शन. बसन्त कुमार लाल, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1991.

6. मानवता के प्रणेता महर्षि अरविन्द ,प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण .2021 ,

7. जोशी ,डॉ० धनंजय. नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध ,कनिष्क पब्लिशर्स ,डिस्ट्रीब्यूटर्स ,संस्करण .2014

8. शिक्षा पर श्री अरविन्द व श्रीमाताजी के कुछ चुने हुए वचन ,श्री अरविन्द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट ,राजस्थान ,तृतीय संस्करण 2019.

9. https://www.allresearchjournal.com/archives//2016vol2issue/3PartB/-2-2 .103pdf

☆☆☆